(2) इसके माध्यम से बालकों की झिझक दूर होती है और वे अपना भाव सरलता से व्यक्त कर सकते हैं।

(3) मौखिक भाषा द्वारा बालकों को प्रभावशाली ढंग से बातचीत करने का अवसर मिलता है।

(4) जिन वस्तुओं अथवा विषयों में बालकों की रुचि हो, उसके सम्बन्ध में वे प्रायः बातचीत करते देखे जाते हैं।

(5) इस प्रकार बालक स्वाभाविक रूप से अपने विचारों को सरलता से प्रकट करता है।

(6) मौखिक भाषा के माध्यम से बालकों में अपने आप की अभिव्यक्ति की स्पष्टता आ जाती है।

(7) यदि बालक बातचीत में अपने विचारों को अच्छी तरह व्यक्त कर पाता है तो वह अच्छी तरह से प्रवाहयुक्त लिख भी सकता है।

(8) मौखिक भाषा के माध्यम से बालक कुशल वक्ता बन सकता है।

(9) बोलचाल प्राप्त करने के लिए कथन [illegible] प्रश्नोत्तर के [illegible] आदि साधन सफल बनाने आवश्यक हैं।

(10) भाषा की शुद्धता पर ध्यान देना आवश्यक होता है क्योंकि व्यक्ति का उच्चारण सही होना है।

(11) का व्यावहारिक ज्ञान की शुद्धता और [illegible] के लिए मौखिक भाषा बोलने को प्रेरित करता है।

मौखिक भाषा के लाभों के नाम

मौखिक भाषा के लाभों के निम्नलिखित लाभ होते हैं।

(1) बालक की झिझक दूर हो जाती है।

(2) भाषा विषयक उच्चारण शुद्ध हो जाता है।

(3) इससे अलंकारिक शुद्धता, प्राप्त सिद्ध होती है।

(4) इससे भाव - स्पष्टीकरण की क्षमता भी बढ़ती है।

(5) इससे निर्भीक भाव - प्रकाशन की क्षमता भी बढ़ती है।

(6) छात्र कुशल वक्ता / वाचक बनकर समाज [illegible] में कविता कहानी सुनाता है।

(7) इससे छात्रों में कविता रूप में उत्पन्न होती बोलने की क्षमता है।

मौखिक भाषा को विकसित करने की प्रविधियाँ

Strategies for developing oral language

आत्म-प्रकाशन (Self-expression)

बाल विकास के अनुसार आत्म-प्रकाशन मानव की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

मौखिक भाषा : मानव अपने हृदयगत विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिन ध्वनि संकेतों का प्रयोग करता है उसे मौखिक भाषा कहते हैं।

शिशुओं के लिए मौखिक भाषा का महत्व :—

शिशुओं के लिए मौखिक भाषा का महत्व इस प्रकार है।

(1) मौखिक भाषा के माध्यम से बालक आत्मविश्वास से अपने विचारों को सरलता एवं स्पष्टतापूर्वक व्यक्त कर सकता है।

(6) अभिव्यक्ति के स्तर होने वाले शब्दों की निरन्तरता करके शब्द-भण्डार में वृद्धि की जा सकती है।
(7) अभिव्यक्ति से छात्रों को वस्तुओं, उदाहरण एवं जीवन्त प्राणियों से परिचय होता है।
पूर्ण निखारने में भी समर्थ बनाया जा सकता है।

मौखिक अभिव्यक्ति हेतु विधियाँ पद्धतियाँ

मौखिक अभिव्यक्ति की निम्नलिखित पद्धतियाँ प्रचलित हैं।

(1) वार्तालाप विधि।
(2) वाक्य रचना विधि।
(3) प्रश्नोत्तर विधि।
(4) कहानी घटना एवं अनुभव कथन विधि।
(5) दृश्य एवं वस्तु वर्णन।
(6) बाल गीत एवं कविताएँ।
(7) भाषण विधि।
(8) अभिनय विधि।

(1) वार्तालाप विधि

अध्यापक तथा छात्रों के कक्षा में पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है। छात्र जीवन में बातचीत के द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति व्यक्त कर सकता है।

(2) इसके माध्यम से बालकों की
झिझक दूर होती है और वे बोलना
अभिव्यक्ति सरलता से सीख
सकते हैं।

(3) मौखिक भाषा द्वारा बालकों को
प्रभावशाली ढंग से बोलने के
बातचीत करने का अवसर मिलता
है।

(4) जिन वस्तुओं अथवा विषयों
में बालकों की रुचि हो, उनके
सम्बन्ध में वे खुल बातचीत करते
देखे जाते हैं।

(5) प्रेम द्वारा बालक स्वाभाविक रूप
से अपने विचारों को सरलता
से प्रकट करता है।

(6) मौखिक भाषा के माध्यम से
बालकों में अपने आप की भावना
की स्पष्टता आ जाती है।

(7) यदि बालक बातचीत में अपने
विचारों को अच्छी तरह व्यक्त
कर पाता है तो वह अच्छी
तरह से प्रवाहपूर्ण लिख भी
सकता है।

(8) मौखिक भाषा के माध्यम से
बालक कुशल वक्ता बन
सकता है।

(घ) इसकी माध्यम से बालकों की झिझक दूर होती है और वे बिना आत्मविश्वास व्यवस्था के साथ बोल सकते हैं।

(ङ) मौखिक भाषा द्वारा बालकों को प्रभावशाली ढंग से बातचीत करने का अवसर मिलता है।

(च) जिन वस्तुओं का अध्ययन विषयों में बालकों की रुचि हो, उनसे सम्बन्ध में वे प्रश्न बातचीत करके देखते जाते हैं।

(छ) इस प्रकार बालक स्वाभाविक रूप से अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रकट करता है।

(ज) मौखिक भाषा के माध्यम से बालकों में अपने भाव की अभिव्यक्ति की स्पष्टता आ जाती है।

(झ) यदि बालक बातचीत में अपने विचारों को अच्छी तरह व्यक्त कर पाता है तो वह अच्छी तरह से प्रवाहपूर्ण लिख भी सकता है।

(ञ) मौखिक भाषा के माध्यम से बालक कुशल वक्ता बन सकता है।